

भाकृअनुप-केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान

कपास की खेती के लिए 30 से 6 जून, 2015 साप्ताहिक सलाह

(33 मानक सप्ताह)

"सलाहकार संबंधित राज्यों के राज्य कृषि विश्वविद्यालयों से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर किया जाता है"

साप्ताहिक मौसम रिपोर्ट :

राज्य / जिले	जून- 15	जुलाई माह में वर्षा की स्थिति(मिली ली.)						साप्ताहिक सलाह
दिनांक	30	1	2	3	4	5	6	
पंजाब								
भटिंडा	8	13	3	0	0	0	0	इन तीनों राज्यों (पंजाब, हरियाणा और राजस्थान) में 1-2 जुलाई की हल्की बारिश से सफेद मक्खी (व्हाइट फ्लाई) का प्रकोप कम हो जाएगा। खेतों में निराई, खाद छिड़काव का कार्य 3 से 5 जुलाई के दौरान किया जा सकता है। इनमें से कुछ स्थानों पर सफेद मक्खी, लीफ हूपर (इल्ली), थ्रिप्स और सावले कपास कीड़े (इस्की काटन बग) का प्रकोप प्रारम्भ हो रहा है। यदि आवश्यकता हो तो नीम तेल आधारित स्प्रे का उपयोग किया जा सकता है।
फिरोजपुर	7	17	4	0	0	0	1	
मुक्तसर	9	11	4	0	0	0	0	
मानसा	9	0	0	0	0	0	0	
हरियाणा								
सिरसा	6	0	0	0	0	0	0	
हिसार	6	3	0	0	0	0	0	
फतेहाबाद	5	3	0	0	0	0	0	
राजस्थान								
हनुमानगढ़	6	4	7	4	2	2	0	
श्रीगंगानगर	6							
बांसवाड़ा	1	0	0	0	0	0	1	
उड़ीसा								
कोरापुट	8	23	17	31	34	9	1	इस सप्ताह और आगे भी बारिश की संभावना की भविष्यवाणी की गयी है। इस दौरान जब भी सुविधा हो तत्काल बुवाई की पुरजोर सिफारिस की जाती है।
कालाहांडी	34	9	14	27	29	3		
बोलांगीर	10	11	11	11	10	7	4	
गुजरात								
अमरेली	0	0	0	0	0	0	2	गुजरात एवं मध्य प्रदेश राज्यों में जुलाई के पहले दो सप्ताह शुष्क रहने उम्मीद की जा रही है। वर्षा सिंचित क्षेत्रों में इस सप्ताह बीज बोने से नवजात अंकुरित बीज को नमी के अभाव में नमी तनाव का कारण हो सकता है।
भावनगर	3	0	0	0	0	0	1	
जामनगर	0	0	0	0	0	0	2	
राजकोट	0	0	0	0	0	0	2	
भरुच	4	0	0	0	0	0	1	
सबरकांठा	0	0	0	0	0	0	1	
सुरेन्द्रनगर	0	0	0	0	0	0	2	
अहमदाबाद	0	0	0	0	0	0	1	
वडोदरा	0	0	0	0	0	0	1	
पाटन	0	0	0	0	0	0	2	
मेहसाना	0	0	0	0	0	0	2	
मध्य प्रदेश								
खरगोन	0	0	0	0	0	0	1	
धार	0	0	1	0	0	0	2	
खंडवा	0	0	0	0	0	0	1	
महाराष्ट्र								
नागपुर	10	10	6	2	2	0	0	सप्ताह के प्रारम्भ में थोड़ी बारिश की संभावना है इसके बाद 8-9 दिनों तक शुष्क अवधि रहेगी इसलिए नवजात अंकुरित पौधों को नमी तनाव से बचाने के लिए जहां संभव है वहाँ सिंचाई करें।
वर्धा	10	5	2	0	0	0	0	
चन्द्रपुर	12	10	4	0	2	4	0	
यवतमाल	7	3	2	0	0	0	0	
अमरावती	10	10	12	2	0	0	0	

अकोला	2	0	3	0	0	0	0	जल्दी बोये गए कपास (15-20 दिन बुवाई के बाद) में इंटर कल्चर के बाद खपतवार प्रबंधन किया जाना चाहिए। जब खेतों में पर्याप्त नमी हो तो खाद का डाला जाना चाहिए। यदि बुवाई के समय आवश्यक खाद की खुराक नहीं डाला गया है तो इस सप्ताह इंटर कल्चर के बाद एक बार तुरंत डाला जाना चाहिए। मानसून से पहले बोये गए कपास में पौधे मुरझाने (विल्टिंग) के लक्षण दिखाई देते हैं, यह अधिकांशतः बीटी संकर प्रजाति में 20-30 प्रतिशत तक दिखाई दे तो इस सप्ताह रणनीति में सुझाए गए सिफरिसों का अनुसरण करें।
बुलढाना	2	0	2	0	0	0	0	
परभणी	0	0	0	0	0	0	0	
नांदेड	0	0	0	0	0	0	0	
बीड	0	3	0	0	0	5	0	
वासिम	2	0	2	0	0	0	0	
धुले	0	3	0	0	0	3	0	
जलगांव	8	3	0	0	0	0	0	
जालना	0	0	0	0	0	0	0	
औरंगाबाद	0	4	0	0	0	3	0	
तेलंगाना								
आदिलाबाद	0	0	10	4	1	1	0	जुलाई के पहले दो सप्ताह में तेलंगाना के अधिकांश हिस्सों में छुटपुट बारिश होगी। करीमनगर एवं नालगोंडा में छुटपुट बूँदा बंदी (बारिश) के साथ बादल छाए रहने की संभावना है। देर से बुवाई न करें। यदि अब तक बुवाई नहीं किया गया है तो सप्ताह के प्रारम्भिक दिन बुवाई के लिए अच्छा मौका है।
वारंगल	1	3	8	7	4	1	0	
खम्मम	2	2	3	13	4	3	0	
करीमनगर	0	0	4	8	4	0	0	
नालगोंडा	6	1	1	6	2	1	0	
आंध्रप्रदेश								
गुंटूर	5	0	5	8	0	0	0	इस सप्ताह गुंटूर और प्रकाशम में बारिश होगी। अतः सिंचित क्षेत्रों में बुवाई की सलाह दी जाती है।
प्रकाशम		3	0	0	0	0	0	
कर्नाटक								
धारवाड़	5	2	4	4	2	4	1	इस सप्ताह के सुरुवात में हल्की बारिश होने की उम्मीद है। यदि कपास की बुवाई अब तक नहीं किया गया है तो बुवाई तुरंत कर लिया जाए।
हवेली	4	3	4	4	2	4	1	
मैसूर	0	4	5	5	5	4	1	
तमिलनाडू								
पेरम्बलूर	3	2	0	0	0	0	0	फसल में सिंचाई यह सूनीस्थित करने के लिए करें कि पौधों में गूलर के विकास के समय नमी तनाव का सामना न करना पड़े। 2% डीएपी के पत्तों पर छिड़काव पौधे की सेहत का लिए लाभ दायक हो सकता है।
सलेम	2	0	0	0	0	0	0	
त्रिची	1	0	0	0	0	0	0	
विरडुनगर	2	1	0	0	0	0		
आदर्श वर्षा								
वर्षा मि.मी.	<5	5-20	20-50	50-80	>80			

सीआईसीआर द्वारा प्रबंधन रणनीति की सिफारिशें:

(के.आर. क्रांति द्वारा लिखित: इस सप्ताह का कोई हिस्सा किसी भी प्रकाशन इलेक्ट्रॉनिक या प्रिंट या किसअन्य साधन में किसी भी रूप में लेखक के अनुमति के बिना इस्तेमाल किया जा सकता है।)

इस संक्षिप्त नोट में प्रबंधन रणनीति की सिफारिशें सीआईसीआर किए गए प्रयोगों के परिणामों के आधार पर और विभिन्न राष्ट्रीय और वैश्विक एजेंसियों द्वारा विकसित पारिस्थिति के अनुरूप विकसित दिशा-निर्देशों के आधार पर किया जा रहा है।

समान्य फसल स्वास्थ्य प्रबंधन:

1. जल्दी परिपक्व होने वाले या संकर-बीटी-कपास किस्मों को वर्षा सिंचित क्षेत्रों में प्राथमिकता दिया जा सकता है।
2. पहली बारिश (80 मिमी) वर्षा के तुरंत के बाद वर्षा सिंचित क्षेत्रों में जल्दी बुवाई को प्राथमिकता दिया जाना चाहिए।
3. वर्षा सिंचित क्षेत्रों में विशेष रूप से उच्च घनत्व रोपण प्रणालियों में लकीरें (रिजेज) पर बुआई सबसे ज्यादा पसंद किया जाता है।
4. वर्षा सिंचित क्षेत्रों में जहां सिंचाई सुविधा हो वहाँ संकर-बीटी-कपास 90 X 30 सेमी दूरी पर अधिक चौड़ाई (व्यापक रिक्ति) में बोया जा सकता है।

5. गैर बीटी किस्मों सूरज जैसे (सीआईसीआर) एनएच 615, (वी.एन.-माऊ, परभणी), एकेएच 081 (डॉ PDKV अकोला), फुले धन्वन्तरी (एमपीकेवी राहुरी) और अंजलि (एलआरके516) जल्दी परिपक्व होने वाली किस्मों हैं यदि इन किस्मों को उच्च घनत्व में 15 जून से पहले 60x 10 (फुले धन्वन्तरीके लिए 40x10cm) सेमी दूरी पर रोपण किया जाता है तो सूखा तनाव और बालीवर्म के प्रकोप से फसल बच जाएगा।
6. गैर बीटी कपास की किस्मों की दो पंक्तियों के बीच एक पंक्ति लोबिया या सोयाबीन के (ब्रेडायरिजोबियम जेपेनिकम (Bradyrhizobium japonicum) से उपचारित बीज को 45 सेमी में वैकल्पिक (आल्टर्नेट) पंक्तियों में 10 सेमी पौधे से पौधे दूरी पर लगाया जा सकता है।
7. अंतर फसल(इंटर क्रोपिंग) में सोयाबीन या लोबिया के ब्रेडायरिजोबियम जेपेनिकम (Bradyrhizobium japonicum) से उपचारित बीज को संकर बीटी के साथ लगाया जा सकता है।
8. कपास के खेतों की सीमा पंक्तियों में अरहर की (2-3 पंक्तियाँ) लगाने से मिली बग (आटे के कीड़े) का प्रकोप को रोकने के लिए सहायक होगा और ये रिफ्यूजिया (refugia)के रूप में सेवा करते हैं।
9. पहली बारिश के बाद फार्म खाद या कम्पोस्ट 5 से 10 टन / हेक्टेयर की दर से खेतों में डाला जाना चाहिए।
10. एजोबेक्टर और पीएसबी 25 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से पोषक तत्वों नियतन (फिक्सेशन) के लिए इस्तेमाल किया जाना चाहिए।
11. क्राइ 1 एसी (Cr1Ac) की उचितअभिव्यक्ति सुनिश्चित करने के लिए और पत्ता लाल रोग की समस्याओं को कम करने के लिए 1% कोबाल्ट क्लोराइड का छिड़काव करें। स्थूल और सूक्ष्म पोषक के लिए अनुकूल पोषक तत्व प्रबंधन क्राइ 1 एसी (Cr1Ac) की उचितअभिव्यक्ति सुनिश्चित करने के लिए और पत्ता लाल रोग की समस्याओं को कम करने के लिए MgSO₄ 2% यूरिया के साथ 2% डीएपी का छिड़काव करें। विल्ट के प्रारंभिक चरण में पौधों की रिकवरी के लिए 1% कोबाल्ट क्लोराइड छिड़काव तथा 1% बाबेस्टीन से ताने के आस पास की मिट्टी को गीला (तर) करें यह फसल की तंदरुस्ती के लिए मददगार पाया गया है।
12. पत्ता लाल रोग का निवारण: 90 दिन के फसल में 2% यूरिया, 0.5% जिंक सल्फेट और 0.2% बोरान दो बार में 15 दिनों के अंतराल छिड़काव से लाल पत्ता रोग से बचाव होगा।
13. कलियों (स्क्वेयर) और फूलों का झड़ना रोकने के लिए फिनोलेक्स 4.5 एसएल ((एनएए) हार्मोन, 21 पीपीएम 7 लीटर प्रति 15 लीटर पानी के दर से मिला कर स्प्रे करें।

कीटों एवं रस चूसक कीटों का प्रबंधन:

सामान्य सिफारिशें

ये करें:

1. कीट एवं रस चूसक कीट प्रतिरोधी किस्मों / संकरों का चयन करें। बीटी संकर किस्मों कीट एवं रस चूसक कीट प्रतिरोधी होते हैं इनमें कीटनाशक छिड़काव की आवश्यकता बहुत कम होती है।
2. कपास के फसल के साथ लोबिया या चारा (सोरगम) या सोयाबीन अथवा काले चने के साथ अंतर-फसल (इंटर क्रॉप) लगाने से चूसक कीटों के भक्षक / शिकारी कीटों (प्रिडेटर) की वृद्धि के प्रोत्साहन के लिए लगाना चाहिए।
3. इमेडाक्लोफ्रिड 8 ग्राम, विटावेक्स या थिरम 3 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज में उपयोग से चूसक कीट (सर्किंग पेस्ट) और रोगों के खिलाफ फसल की रक्षा करेगा।
4. चूसक कीट के लिए विशेष रूप से अतिसंवेदनशील किस्मों में नाइट्रोजन उर्वरकों का उपयोग करने से इससे होने वाले नुकसान को बहुत कम करता है।
5. खेत की स्वच्छता (घाँस मुक्त) बनाए रखें।
6. मिली बग संक्रमित पौधों को बाहर निकालें और कपास के खेत से दूर नस्ट करें।
7. कम विघटनकारी कीट प्रबंधन के लिए नीम से तैयार कीटनाशक और जैविक नियंत्रण विकल्प का उपयोग करें।
8. गुलाबी सूँड़ी (पिंक बोलवर्म) की निगरानी के लिए फेरोमोन ट्रेप का उपयोग कुशल एवं प्रभावकारी साधन है।
9. मिरीड बग, मिली बग और अन्य चूसक कीटों (सर्किंग पेस्ट) के प्रभावी एवं पर्यावरण के अनुकूल नियंत्रण के लिए पौधों के तनों में और जड़ों के आस पास इमेडाक्लोफ्रिड डाइमथोयेट या एसिफेट 30-40 डीएएस और 50-60 डीएएस का उपयोग प्रभावी नियंत्रण के लिए करें।

ये ना करें:

10. कपास के पर्ण कुंचन वायरस के प्रकोप को रोकने के लिए उत्तर भारतीय क्षेत्रों में देर से (15 मई के बाद) कपास की बुआई करने से बचें।
11. कीटों के प्राकृतिक एवं स्वाभाविक जैविक नियंत्रण के लिए जहां तक संभव हो सके फसल के पहले दो माह तक रासायनिक कीटनाशक के उपयोग ना करें।
12. कपास के पत्ते मरोड़क (लीफ फ़ोल्डर) के लिए नाबालिग और नगण्य लेप्टोटोटेरन कीटों (lepidopteran) जैसे कि साइलेप्टा डेरोगेटा (Sylepta derogate), एमोनिस फ्लेवा (Anomis flava) और सेमिलूपर (semilooper)के लिए कीटनाशक

छिड़काव (स्प्रे) न करें। इनके लार्वा से कपास को नगण्य नुकसान होता है। ये पैरासिटायेड (parasitoids)के लिए मेजबान के रूप में सेवा करता है। जैसे ट्राइकोग्रामा, एपेंटेल्स(Apanteles) और साइसीरोपा फार्मोसा (Sysiropa Formosa)प्रजाति जो हेलिकोवर्पा आर्जिमेरा (HArmigera) और अन्य बालीवर्म पर हमला करके नुकसान करते हैं।

13. चयन के दबाव से बचने के लिए बीटी कपास पर बीटी-योगों स्प्रे न करें। जैसे की
14. पत्तों से संबन्धित नियोनिकोटिनाइड (Neonicotinoid) कीटनाशकों का उपयोग करने से बचें जैसे कि एसेटेमीप्रिड (Acetamiprid),ईमिडाक्लोप्रिड (Imidacloprid), क्लोथिएडिन (Clothianidin) और थाईमथोजेम (Thiomethoxam) चूंकि संकर कपास के बीज इमेडाक्लोप्रिड से उपचरित होते हैं इसलिए कीटों में इनके और उपयोग से इनके प्रति प्रतिरोध क्षमता बढ़ जाने की संभावना होती है।
15. डब्ल्यूएचओ ग्रेड -1 कीटनाशकों का उपयोग न करें। अत्यंत खतरनाक श्रेणी के कीटनाशकों जैसे कि फास्फेमिडोन (Phosphamidon), मिथोमईल पैराथिओन(Methomyl Parathion), फोरेटे, (phorate)मोनोक्रोटोफॉस (Monocrotophos),डाईक्लोर्वोस (dichlorvos), कार्बोफुरान (Carbofuran), ट्राईजोफास(triazophos) और मेटासाइस्टोस (Metasystox)|
16. फिप्रोनिल (Fipronil)और पाइरेथ्रोइड (pyrethroids) सफेद मक्खी (व्हाइटफ्लाई)के प्रकोप रोकने के लिए न करें।
17. कीटनाशक मिश्रण का उपयोग बिल्कुल ना करें । कीटनाशक मिश्रण से पारिस्थितिकी प्रणालियों (इको- सिस्टम) बाधित होती है जो गंभीर रूप कीट प्रकोप आमंत्रित करती हैं।

रसचूसक कीटों का प्रबंधन:

आर्थिक हानि सीमा (ईटीएल): यदि सफेद मक्खी तथा जेसिड की हानि का स्तर आर्थिक हानि सीमा ग्रेड अर्थात् निचली पतियों के मुड़ने और सिकुड़ने तथा किनारों से पीले पड़ना आदि 25%या अधिक पौधों में दिखाई दे तो नीचे दिये गए नियंत्रण उपाय अपनाए:

- क) नीम तेल 1.0%+ नीबोलीगिरी 5.0% + 0.05-0.1 डिटरजेंट।
- ख) वर्टीसीलियम लेकानी @10ग्राम/ प्रति लीटर पानी; अच्छे सूत्रण विश्वसनीय निर्माताओं से ही खरीदें।
- ग) डाइफेन्थियूरोन (50 WP 800 ग्राम /हे.)
- घ) फ्लोनिकोमिड 50 WG 200 aI/ हे. या
- ड) बुप्रोफेजीन 25% SC 200 ग्राम aI/ हे

पर्यावरण सुरक्षा, पारिस्थितिकी प्रभावकारिता और प्रतिरोध से संबंधित कारकों को ध्यान में रखते हुए कीटनाशक जैसे डाइमथोएट या एसिफेट या इथिओन का भी इस्तेमाल सिर्फ विकल्प के रूप में किया जा सकता है।

यदि कलियों (स्क्वेयर) को मिरीड बग के प्रकोप का आर्थिक नुकसान के स्तर पर दिखाई दे तो एसिफेट 75 एसपी या डाइमथोएट @ एक ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से मिलाकर छिड़काव करें।

गूलर की सूंडियों का प्रबंधन:

गूलर के सूंडियों का नियंत्रण करने में बीटी कपास प्रभावी है।

गैर बीटी कपास के कीट नियंत्रण के लिए निम्न लिखित रणनीतियों की सिफारिस की जाती है:

गैर बीटी कपास के लिए अमेरिकन सूँडी (हेलिकोवर्पा आर्मिजेरा) द्वारा 50% पौधों की कलियाँ ग्रस्त होने पर इस आर्थिक हानि स्तर पर निम्न उपाय करें:

- 1) बीटी कपास के फसल पर एचएएनपीवी (NaHPV)का छिड़काव करें, इसके एक सप्ताह बाद 5% निबोली गिरी का छिड़काव करें या गूलर की सूंडियों स्पोडोप्टेरा (तम्बाखू की इल्ली) या सफेद मक्खी के नियन्त्रण के लिए आर्थिक हानि स्तर पर फोसलोन कीटनाशक का प्रयोग करें।
- 2) बुवाई के 70-80 दिनों बाद बीटी रहित कपास पर उपलब्ध होने पर ट्रायकोग्रामा का प्रयोग करें।
- 3) गूलर की सूंडियों, विशेष रूप से, हेलिकोवर्पा आर्मिजेरा नियन्त्रण के लिए प्रभावी कीटनाशक निम्न है:

- क) क्लोरेनट्रेनिलीप्रोल (कोरजेन)
- ख) फ्लुबेनडाइमाइड (फेम)
- ग) स्पीनोसेड
- घ) इमामेक्टीन बेंजोएट तथा
- ड) इंडोक्साकार्ब

ये कीटनाशक लक्षित नाशीकीटों के लिए चयनित अति विषैले है जबकि कपास पारिस्थिकीतंत्र में लाभदायक कीटों के लिए कम विषैले हैं। ये कीटनाशक पर्यावरण हितैषी कीटनाशक प्रतिरोधिता प्रबंधन कार्यक्रम के लिए उपयुक्त है।

4) गुलाबी सूँडी और चितीदार सूँडी : इनके लिए आर्थिक हानि सीमा है - 10 हरे गुलरों में एक जीवित सूँडी मिलने पर या लगातार तीन रातों में 8 पतंग (किट) प्रति ट्रेप प्रति रात पकड़ में आने पर; क्विनोलाफास 25 इसी या का 2 मिली प्रति लीटर पानी की दर से या थायोडिकार्ब 75 डब्लू पी (WP) का या कोई पाइरेथ्रोइड का फसल पर छिड़काव करें।

अन्य कीटों का नियंत्रण:

- 1) स्पोडोप्टेरा लिटुरा: इस इल्ले के अण्ड पुंजों को हाथ से इकत्र करें अथवा एसएनपीवी (स्पोडोप्टेरा लिटुरा न्यूक्लियर पॉलीहेड्रोसिस वायरस) का 500 एलई/ हे. की दर से या नोवाल्ग्रोन 10 इसी का 200 मिली या थायोडिकार्ब (लार्विन) 75 डब्लू पी 250 ग्राम पाउडर 250 लीटर पानी में मिला कर प्रति एकड़ छिड़काव करें।
- 2) प्ररोह घून के नुकसान को कम करने के लिए प्रोफेनोफास 2 मिली प्रति लीटर पानी की दर से फसल पर छिड़काव करें।
- 3) भारी वर्षा वाले क्षेत्रों में घोंघों का प्रकोप: अधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में घोंघे का प्रकोप: प्रलोभक मेटेल्डीहाइड 2% (स्नेल किल) 12.5 कि. ग्रा. / हे. की दर से घोंघों के छिपने की जगह पर प्रयोग करें । मेटों, फसल के चारों ओर उन जगहों पर डालें जहां इनका नुकसान दिखायी दे।

रोग प्रबंधन:

नवीन मुरझान (पैराविल्ट) मुरझान/ जड़ गलन: कुछ खेतों में सूखा के बाद वर्षा होने या सिचाई करने पर इसके लक्षण फसल में दिखायी देते हैं। प्रभावित पौधों पर मुरझान के लक्षण दिखायी देने के कुछ घंटों में ही कोबाल्ट क्लोराइड 10 मि. ग्रा. प्रति लीटर पानी की दर (पीपीएम) से छिड़काव करे या प्रभावित पौधों की जड़ों में कापर-आक्सी-क्लोराइड 25 ग्रा. तथा यूरिया 200 ग्राम या कार्बोडेजिम 1 ग्रा./ लीटर की दर से 10 लीटर पानी लेकर मिट्टी को तर करें।

गूलर सड़न:साधारणतः प्रारम्भिक विकसित पौधे के निचले हिस्से के गूलर बादलों के मौसम या लगातार रिमझिम बारिस होते रहने की स्थिति में गूलर सड़ जाता है। मैकोजेब 75 डब्लूपी + क्लोरो थैलोनिल 70 डब्लूपी प्रत्येक 2 ग्राम पाउडर प्रति लीटर पानी की दर से ले कर फसल पर छिड़काव करें। अच्छा पराभव लाने के लिए सिल्वेट 99 के 10 ग्राम या 10 ग्राम ट्राइटन 50 मिली 100 लीटर पानी की दर से मिलाए।

एल्टरनेरिया अंगमारी: मैकोजेब 25 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से फसल पर आवश्यकतानुसार छिड़काव करें।

माइरोथेसियम पत्ती धब्बा रोग और जीवाणु झुलसा: स्टेप्टोसाइक्लीन सल्फेट (15-20 ग्रा./ हे.) + कापरआक्सीक्लोराइड (1500-2000 ग्रा./हे.) 200-250 लीटर पानी की दर से फसल पर छिड़काव करें।

खरपतवार प्रबंधन:

छोटे खरपतवारों पर खरपतवारनाशक अधिक प्रभावी होते हैं।

घासों : क्वीजेलोपोफ- इथाइल या फेनोक्सप्रोप-इथाइल या फ्लूएजीफोप-ब्यूटाइल का छिड़काव।

नरकर और घासों: प्रोपेक्विजाफोप-इथाइल का छिड़काव करें।

चौड़ी पत्ती वाले खरपतवार: पाइरोथियोबेक सोडियम का छिड़काव करें।

खरपतवारों उगने पर खरपतवारनाशकों से उनका समयबद्ध एवं प्रभावी नियंत्रण होता है।

जब खेत की मिट्टी गीली हो तो हाथ से निराई में मुश्किल हो जाती है ऐसे नए शाकनाशीविशेष रूप से प्रभावी और समय पर नियंत्रण प्रदान करता है। खरपतवारनाशी (हर्बीसाइड) नवजात खरपतवारों (10-15 दिनों आयु से कम) पर अधिक प्रभावी एवं कारगर होते हैं। घाँसकुल के खरपतवारों के नियंत्रण के लिए क्लोजईलोफोप-इथाइल, फेनोक्सप्रोप सोडियम, फ्लूयाजीफोप ब्यूटाइल,का प्रयोग कर सकते हैं। नरकर और घासों के लिए पायरिथोबक इथाइल हैं और चौड़ी पत्तीवाले खरपतवारों के लिए पायरीओथिबेक सोडियम कारगर है। अधिक जानकारी के लिए कृषि विश्वविद्यालयों ए तकनीकी विशेषज्ञों से विचार विमर्श कर सकते हैं।

जल जमाव प्रबंधन:

कपास अतिरिक्त पानी के लिए बहुत संवेदनशील है। मध्य और दक्षिण भारत के कई हिस्सों में अधिक बारिश कारण के पानी का जमाव होने से समस्याग्रस्त किया जा सकता है। गहरी काली मिट्टी पर उगाए गए कपास जहां पानी निकासी व्यवस्था कमजोर है वहाँ जल जमाव की वजह से कपास की फसक प्रभावित है। भारी वर्षा की स्थिति में खेतों से पानी निकासी के लिए भूमि के ढलान के साथ पर्याप्त मात्रा में जल निकासी चैनलों या अतिरिक्त तरीके से पानी निकासी की व्यवस्था करें। उन क्षेत्रों में जहां वर्षा अधिमानतः 700-900 मिमी हो वहां मिट्टी में बेहतर की नमी संरक्षण के लिए भूमि को पुनः निर्माण कर लकीरें (रिजेज़) रिज हल की मदद से बनाए। यह तकनीकी और कपास की लकीर (रिजेज़) में बुवाई से वर्षा जल का संरक्षण होगा और ये रिजेज़ और फ़रोज भारी वर्षा वाले क्षेत्रों में अतिरिक्त जल के लिए जल

निकासी चैनलों की तरह कार्य करते हैं।

ड्रेनेज चैनल खेतों की सीमाओं में साथ खोला जाना चाहिए, जिससे अतिरिक्त जल आसानी से खेतों से निकाला जा सके। यदि बुवाई अभी तक पूरा नहीं किया गया तो रिजेज और फ़रोजके शीर्ष में तुरंत बुवाई शुरू करने के लिए सिफारिश की है। यह मानना है कि रिजेज के शीर्ष पर लगाकर लकीरें अतिरिक्त पानी बाहर निकाल जाएगा जिससे भारी बारिश फसल को प्रभावित नहीं करेगा क्योंकि रिजेज और फ़रोज के निर्माण से अतिरिक्त जल खेतों से बाहर निकाल जाएगा। यदि भारी बारिश के मौसम का पूर्वानुमान कर रहे हैं तो फसल उत्पादन लागत घाटे को कम करने की लिए उर्वरक छिदकव स्थगित किया जा सकता है।

फसल जल जमाव के कारण पौधा पीला हो जाता है तो 0.5-1.0% डीएपी या 19:19:19 (नाइट्रोजन के घुलनशील योगिक) का पत्तों पर साप्ताहिक अंतराल में छिदकाव (फोलियर स्प्रे) करने से पौधों जल जमाव के प्रभाव से उबरने में मदद मिलेगी।

साप्ताहिक मौसम सलाहकार रिपोर्ट समन्वय टीम:	
वैज्ञानिक	पता
डॉ. के.आर. क्रांति	निदेशक, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)
डॉ. ए. एच. प्रकाश	प्रधान वैज्ञानिक, एवं प्रधान सीआईसीआर, क्षेत्रीय केंद्र, कोयंबटूर (तमिलनाडु)
डॉ. डी. मोंगा	प्रधान सीआईसीआर, क्षेत्रीय केंद्र, सिरसा (हरियाणा)
डॉ. एस. बी. सिंह	प्रधान, फसल सुधार विभाग, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)
डॉ. संध्या क्रांति	प्रधान, फसल संरक्षण विभाग, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)
डॉ. ब्लेज डीसूजा	प्रधान, फसल उत्पादन विभाग, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)
डॉ. इसाबेला अग्रवाल	वरिष्ठ वैज्ञानिक, सीआईसीआर, क्षेत्रीय केंद्र, कोयंबटूर (तमिलनाडु)
श्री एम.सबेस	वैज्ञानिक, सीआईसीआर, क्षेत्रीय केंद्र, कोयंबटूर (तमिलनाडु)

प्रभारी वैज्ञानिक, मौसम विज्ञान विभाग (एआइसीएसटीआईपी केंद्र)			
वैज्ञानिक	पता	मोबाइल नं.	ईमेल
डॉ. परमजीत सिंह	पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, (पंजाब)	9463628801	rsmeenars@gmail.com
डॉ. परमजीत सिंह	पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, (पंजाब)	9463628801	rsmeenars@gmail.com
डॉ. पंकज राठोर	पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, (पंजाब)	9464051995	pankaj@pau.edu
डॉ. जगदीश बेनीवाल	सीसीएस-हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार-124004 (हरियाणा)	9416325420	cotton@hau.ernet.in
डॉ. एस. एल.आहूजा	सीसीएस-हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, सिरसा-124004 (हरियाणा)	9255947380	slahuja2002@yahoo.com
डॉ. के. एन. भाटिया	स्वामी केशवानन्द राजस्थान, कृषि विश्वविद्यालय, गंगानगर (राजस्थान)	9352700411	bsmeena1969@rediffmail.com
डॉ. हरफूल मीणा	महाराणा प्रताप, कृषि एवं तकनीकी विश्वविद्यालय, उदयपुर (राजस्थान)	9460246043	hpagron@rediffmail.com
डॉ. एस. एल.आहूजा	सीसीएस-हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, सिरसा-124004 (हरियाणा)	9255947380	slahuja2002@yahoo.com
डॉ. नरेंद्र कुमार	सीएसए- कृषि एवं तकनीकी विश्वविद्यालय, कानपुर (उ. प्र.)	9335699132	jagdishk64@yahoo.com
डॉ. गोफाल्डू	नवासारी कृषि विश्वविद्यालय, नवासारी-396450 (गुजरात)	9662532645	girishfaldy@rediffmail.com
डॉ. एम.डी. खानपारा	जूनागढ़ कृषि विश्वविद्यालय, जूनागढ़ -362001 (गुजरात)	9426990070	cotton@jau.in
डॉ. आर.डब्लू. भरूद	महात्मा फ़ले कृषि विद्यापीठ, रीउरी-413722 (महाराष्ट्र)	9850244087	cotton_mpkv@rediffmail.com
डॉ. आर.आर. पाटिल	पंजाब राव देशमुख कृषि विद्यापीठ, अकोला-440104 (महाराष्ट्र)	9657725801	rs cottonpkv1@yahoo.co.in

डॉ. पी.आर.झाँवर	मराठवाडा कृषि विश्वविद्यालय, प्रभनी-431402 (महाराष्ट्र)	7588151244	crsned@indiatimes.com
डॉ. सतीश परसाई	आर.वी.एस. कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर-472002 (म.प्र.)	9406677601	aiccpkhandwa@gmail.com
डॉ. बी.एस. नायक	उडीसा-कृषि एवं तकनीकी विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर-751003 उडीसा)	9437321675	bsnayak2007@rediffmail.com
डॉ. एस. भारती	आचार्य एन जी रंगा कृषि विश्वविद्यालय, एलएएम गुंटूर (आंध्रप्रदेश)	949072341	bharathi_says@yahoo.com
डॉ. शर्मा	आचार्य एन जी रंगा कृषि विश्व विद्यालय, नांदयाल (आंध्रप्रदेश)	08514-242296	sharmarars@gmail.com
डॉ. अलादिकट्टी	धारवाड कृषि विश्वविद्यालय, धारवाड- (कर्नाटक)	9448861040	yraladakatti@rediffmail.com
डॉ. भीमना	रायचूर कृषि विश्वविद्यालय, रायचूर- 584102 (कर्नाटक)	9448633232	bheemuent@rediffmail.com

नोट: यदि अधोलिखित जानकारी (जैसे: कीटनाशक, रसायन, क्षेत्र या किस मात्रा या संख्या) में यदि कोई दुविधा हो तो संका समाधान के लिए अंग्रेजी अंक से संका समाधान करें।

हिन्दी संस्करण: रजनीकान्त चतुर्वेदी, तकनीकी अधिकारी एवं हिन्दी अधिकारी

केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, पांजरी, वर्धा रोड, नागपुर-441108 (महाराष्ट्र)
दूरभाष-07103,275549 .ईमेल: cicrnagpur@gmail.com वेबसाइट: www.cicr.org.in

कपास की खेती के लिए साप्ताहिक सलाह सं 2/2015 19 से 24 जून साप्ताहिक सलाह (33 मानक सप्ताह)

-- इति --